पाठ 24

लक्ष्य की ओर : दूरदर्शिता

जीवन में आगे बढ़ने के लिए लक्ष्य बनाना जरूरी है।
स्वयं और वातावरण को समझने से लक्ष्य प्राप्ति होती है।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'

स्वस्थ–शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है, जो हमारे भविष्य की रूपरेखा तय करता है। अतः हमारा अच्छा स्वास्थ्य हमारे अच्छे भविष्य का द्योतक है। जब तक शारीरिक रूप से मजबूत नहीं होंगे, तब तक हम अपने मस्तिष्क का सही उपयोग नहीं कर पाएँगे। अपने लक्ष्य को निर्धारित करने के लिए और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें शारीरिक और मानसिक श्रम करना होगा। लक्ष्य प्राप्त करके हम आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कुछ बनना चाहता है, कुछ करना चाहता है। यदि आप कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, तो उसके लिए श्रम करना होगा, अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए लक्ष्य निर्धारित करना होगा। उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योजना बनानी होगी। हम में से बहुत से विद्यार्थी सोचते हैं कि अभी हम बहुत छोटे हैं। अभी से क्या आवश्यकता है भविष्य के बारे में सोचने की। जब समय आयेगा तो सोच लेंगे। परन्तु वह समय फिर कभी नहीं आता। अतः अभी से सोचना शुरू कर देना चाहिए।

क्या हम स्वयं को जानते हैं ?

अपने लक्ष्य को निर्धारित करने से पूर्व आवश्यकता है स्वयं को जानने की–स्वयं की रुचियाँ, रुझान व क्षमताओं को पहचानने की। वास्तव में स्वयं की पहचान ही हमें अपने जीवन को सही दिशा प्रदान करती है। स्वयं को जानने के लिए हम खुद से कुछ प्रश्न करें –

- मैं अपने बारे में क्या सोचता/सोचती हूँ ?
- मुझमें कौनसी विशेषताएँ तथा कमियाँ हैं ?
- मेरे आदर्श कौन हैं ?
- मेरी रुचि विज्ञान के विषयों में है अथवा कला में ?
- यदि नहीं तो वे कौन से विषय हैं जिनमें मेरी रुचि है ?
- मेरा झुकाव शैक्षणिक, वाचिक, यांत्रिक, चिकित्सीय अथवा भाषायी व्यवसायों में से किस ओर अधिक है ?

चित्र 24.1

स्वयं को पहचानने के लिए हम व्यवसाय–परामर्शदाता, मनोवैज्ञानिक, अध्यापक, अभिभावक व मित्रों की सहायता भी ले सकते हैं। इसका निर्धारण करने के लिए सम्बन्धित विशेषज्ञों द्वारा निर्मित की गयी प्रश्नावलियों–परीक्षणों की भी मदद ले सकते हैं। हमें यह भी सोचना होगा कि हम अपने भविष्य से क्या चाहते हैं ?

स्वयं को पहचानने के पश्चात् हमें उन पाठ्यक्रमों को देखना होगा, जो हमारे रुझान व रुचियों के साथ जुड़ सकें। कई बार हम अपनी क्षमताओं के अनुसार पाठ्यक्रम को नहीं ले पाते फलतः हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते। विषयों का चयन करते समय विज्ञान के दो मुख्य व्यवसाय मेडिकल व इन्जीनियरिंग हमारे दिमाग में आते हैं। क्या मेडिकल एवं इंजीनियरिंग ही सफल व्यक्तियों की पहचान हैं ? क्या इनके अतिरिक्त और कोई पाठ्यक्रम हमें सफलता की ओर नहीं ले जा सकता ? ऐसा नहीं है। इनके अतिरिक्त भी बहुत से ऐसे पाठ्यक्रम हैं जो हमें जीवन में सफल बना सकते हैं। आवश्यकता है अपनी क्षमताओं को पहचानकर सम्बन्धित पाठ्यक्रमों से स्वयं को जोड़ने की। विज्ञान के अतिरिक्त कला या वाणिज्य में भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। सम्भव है कि हमारे घर में माता–पिता अथवा बन्धु–बान्धव हमारे पाठ्यक्रम सम्बन्धी किसी निर्णय से सहमत नहीं हों। ऐसी स्थिति में हम उनकी असहमति का कारण जानने की कोशिश करें। हो सकता है उनकी असहमति का कारण आर्थिक स्थिति हो । ऐसी स्थिति में बैंक आदि विभिन्न संस्थानों द्वारा दी जाने

वाली अध्ययन–छात्रवृत्ति की जानकारी प्राप्त कर निर्णय पर पुनर्विचार किया जा सकता है। दुविधा की स्थिति में धैर्य के साथ, स्थिति को समझते हुए ही कोई निर्णय लें।

सूखी मिट्टी ने कुम्हार से कहा ''मुझे अच्छी हाँडी बना दो जिससे हर कोई मेरा मूल्य समझे ओर मुझे काम मे लाये।'' कुम्हार ने कहा –''यह तो हो सकता है, पर इसके लिए पानी में डूबने, डण्डे से पिटने, चाक पर घूमने और आग में पकने के लिए तैयार होना पड़ेगा।

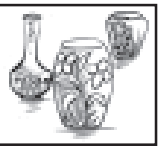

लक्ष्य निर्धारण

अपने लक्ष्य को निधारित करने के लिए दूरदर्शिता आवश्यक है। एक बहुत ऊँची इमारत के शीर्ष को देखने के लिए यह आवश्यक है कि हम उसे कुछ दूरी से देखें, अन्यथा उसके आधार पर जाकर देखने से सम्भव है कि हम उसके शीर्ष को नहीं देख पाएँ अथवा इस असफल प्रयास में गिर पड़ें। यही हमारे जीवन के लक्ष्यों के साथ भी चरितार्थ होता है। यदि हमारा लक्ष्य भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में जाने का है तो उसके लिए अभी से ही योजना बनानी जरूरी है। इस दूरगामी नियोजन में छोटे–छोटे लक्ष्यों को प्राप्त कर के आगे बढ़ना है। इसलिए हमें वार्षिक, साप्ताहिक व प्रत्येक दिन की योजनाएँ बनानी पड़ेंगी। उदाहरण के लिए कक्षा विशेष में अपनी प्रतिदिन की योजनाओं में आप यह सुनिश्चित करें कि आज यह पाठ खत्म करना है, साप्ताहिक व मासिक योजनाओं के द्वारा यह निर्धारित करना है कि इस महीने किसी विषय–विशेष के कितने अध्याय समाप्त करने हैं।

लक्ष्य निर्धारण के बाद जब हम पाठ्यक्रमों को निश्चित कर लेते हैं, उसके पश्चात् हमें उन सर्वोत्तम सम्भावित संस्थाओं के बारे में पता करना है, जहाँ हमारे द्वारा चुने गए पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इसके पश्चात् हमारे कौशल की परीक्षा होती है, जब हम विभिन्न प्रवेश–परीक्षाओं के द्वारा उन संस्थाओं में प्रवेश प्राप्त करते हैं।

अतः यह बहुत आवश्यक है कि हम उन परीक्षाओं के बारे में भी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करें और उसके लिए अपने आप को तैयार करें।

आप सोच रहे होंगे कि इतना सब कुछ करने की क्या आवश्यकता है। उपर्युक्त सभी पद अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, हमारे जीवन की सफलता इन्हीं पदों पर निर्भर करती है। हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि हम वक्त रहते किसी चीज़ की अहमियत को नहीं समझते। एक बार एक चित्रकार ने बहुत खूबसूरत चित्र बनाया। उस चित्र में चेहरे पर बाल पड़े थे और पैरों में पंख लगे थे। सभी अपना–अपना दिमाग लगा कर हार गये, परन्तु उस चित्र का अर्थ नहीं समझ पाए। अन्त में चित्रकार ने उसे समझाया। उसने कहा कि यह चित्र ''अवसर'' का है। इसके चेहरे पर बाल इसलिए हैं क्योंकि अक्सर हम ''अवसर'' को पहचानने में धोखा खा जाते हैं। पैरों में पंख इसलिए हैं कि यदि उसे नहीं पकड़ा गया तो वह पंख फैलाकर उड़ जाएगा। इसलिए यह मत सोचिए कि अभी समय नहीं आया है। अतः हमें इस विषय में सोचना नहीं है। चूँकि यह हमारी जिन्दगी का सवाल है इसलिए हम ही नहीं सोचेंगे तो और कौन सोचेगा ?

किसी भी पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् हम जीविकोपार्जन की ओर अग्रसर होते हैं अपने पाठ्यक्रम को जीविकोपार्जन से जोड़ने के लिए योजना बनानी बहुत आवश्यक है। हमारे जीवन के छोटे–बड़े सभी निर्णयों के लिए योजना बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक विद्यार्थी किसी भी पाठ्यक्रम को करने के पश्चात् यही सोचता है कि क्या इससे मुझे नौकरी मिल जाएगी ? यहाँ आप को इस तथ्य से अवगत कराना आवश्यक है कि किसी भी पाठ्यक्रम के बाद नौकरी शत प्रतिशत सुनिश्चित नहीं की जा सकती लेकिन यह भी सही है कि प्रत्येक पाठ्यक्रम हमें किसी न किसी व्यवसाय से जोड़ता है। अतः यह कहा जाए कि हमारी सफलता में पाठ्यक्रम के साथ–साथ हमारा बहुत बड़ा योगदान है तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। किसी भी व्यवसाय में आने के लिए आपको अपनी सार्थकता सिद्ध करनी होगी। आपको अपने विचारों से दूसरों को अवगत कराते हुए उन्हें समझाना होगा। यह कहा गया है कि किसी भी व्यवसाय का अपने आप में कोई भविष्य नहीं हैं, भविष्य निहित है उन हाथों में जो उस व्यवसाय को चलाते हैं।

यहाँ विद्यार्थियों के ज्ञानोपार्जन के लिए कुछ पाठ्यक्रम और प्रवेश परीक्षाओं के नाम दिये गये हैं–

सभी संकायों के लिए

(10 + 2 के पश्चात्)

स्नातक पाठ्यक्रम	प्रवेश परीक्षाएँ	व्यावसायिक पाठ्यक्रम
कला वाणिज्य व विज्ञान के विभिन्न विषय –।	फाइन आर्ट्स, विदेशी कला, लॉ, होटल मैनेजमेन्ट, ट्यूरिज्म, फैशन टैक्नालॉजी, इन्टीरियर विभिन्न डिजाइनिंग, एन. डी. ए आदि।	आई.टी.आई., पॉलिटेक्निक कम्प्यूटर, मास कम्यूनिकेशन सी. ए, सी. एस. कॉस्ट एवं वर्क्स, एकाउन्ट्स, सी. एफ. ए. इत्यादि।

सभी संकायों के लिए
(स्नातक के पश्चात्)

व्यावसायिक पाठ्यक्रम	प्रतियोगी परीक्षाएँ	विदेश में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आवश्यक परीक्षाएँ
पत्रकारिता, मीडिया, ट्यूरिज्म, होटल, मैनेजमेन्ट, विदेशी भाषा, फैशन, टैक्नालॉजी, कम्प्यूटर, मार्केटिंग लॉ, (तीन वर्षीय) मेडिकल, ट्रान्सक्रियेशन, सेक्रेटेरिल कोर्स, फिल्म टी.वी. एवं रेडियो प्रोडक्शन, हॉस्पिटल, मैनेजमेन्ट, सोशलवर्क, बी.एड. आदि।	प्रशासनिक सेवाएँ, रक्षा सेवा, पेरामिलिट्री, सर्विसेज, पी.टी.ई.टी, बैकिंग सेवाएँ, रेल्वे परीक्षाएँ आदि	Test of English as Foreign Language (TOEFL), International English Language Testing System (IELTS), Graduate Management Attitude Test (GMAT)

विज्ञान के लिए

(10 + 2 के पश्चात्)

कुछ मुख्य प्रवेश परीक्षाएँ	व्यावसायिक पाठ्यक्रम
इंजीनियरिंग, आई.आई.टी, ए., आई. ई. ई. ई. एस. एल. ई. ई. ई. (पाँच वर्षीय), सूचना प्रोद्योगिकी मर्चेन्ट नेवी, डेयरी, टेक्नोलॉजी, आर्किटेक्चर, बी. फार्मा, मेडिकल, सी.पी.एम.टी, एस.पी. एम.टी.ए.एफ.एम.सी.,प्री आयुर्वेद परीक्षा, रक्षा, सेवाएँ आदि	इंजीनियरिंग, फिजियोथेरपी, रेडियोग्राफी, मेडिकल, लैब, टेक्नीशियन, नर्सिंग, वेटेनरी, साइंस, पायलट प्रशिक्षण, होम साइन्स आदि।

ए. आई. ई. ई. ई	–	ऑल इन्डिया इजिंनियरिंग एन्ट्रेंस एग्जामिनेशन
एस. एल. ई. ई. ई.	–	स्टेट लेवल इंजिनियरिंग एन्ट्रेस एग्जामिनेशन
सी. पी. एम. टी	–	सैन्ट्रल प्री मेडिकल टेस्ट
एस. पी. एम. टी	–	स्टेट प्री मेडिकल टेस्ट
ए. एफ. एम. सी	–	आर्मड फोर्स मेडिकल कोर्स प्रवेश परीक्षा
ए. ई. ई. एम. एस	–	ऑल इण्डिया इन्सटीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज

विज्ञान के लिए

(स्नातक के पश्चात्)

व्यावसायिक पाठ्यक्रम	प्रतियोगिता परीक्षाएँ
एस्ट्रोनोमी, मेरीन बायोलॉजी, एस्ट्रो फिजिक्स, डायटेटिक्स, न्यूट्रिशन, टेक्सटाइल, डिजाईनिंग, एन्वायरर्ममेन्टल साइन्स, माइक्रो बायोलाजी, इकोलॉजी, बायोइन्फोर्मेटिक्स, प्लास्टिक टेक्नॉलाजी, पॉलीमर, कैमिस्ट्री, फार्मास्यूटिकल, लेदर टैक्नोलॉजी	फोरेस्ट सर्विसेज, इन्जीनियरिंग सर्विसेज, रक्षा, सेवाएँ इत्यादि

उपरोक्त पाठ्यक्रमों के अलावा भी अनेक पाठ्यक्रम हैं जिन्हें आप अपनी रुचि के अनुसार चुन सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- जीवन में लक्ष्य निर्धारित करने के पश्चात् ही हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।
- लक्ष्य निर्धारण में स्वयं की पहचान और दूरदर्शिता अति आवश्यक है।

जानें, समझें और करें

1. अपने आप से प्रश्न कीजिए व लिखिए–

- मेरी रुचियाँ क्या हैं ? मेरा सपनों का संसार कैसा है ?

.....

.....

- मेरी रुचि का विषय कौनसा है ?

.....

.....

- मेरा लक्ष्य क्या है ?

.....

.....

- कौनसी संस्थाएँ मेरे लक्ष्य में सहायक होंगी ?

.....

.....

- लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मेरे योजनाबद्ध चरण कौनसे हैं ?

.....

.....

उपर्युक्त प्रश्नों को स्वयं से पूछने के लिए आप बिल्कुल सहज होकर बैठें और फिर प्रश्न करें। जवाब के लिए अपनी रूचियों, क्षमताओं, विशेषताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रखें। माना आप अपने आप को एक डॉक्टर के रूप में देखते हैं तो पहले सोचिए कि आपको कौन–से विषय चुनने होंगे ? किन–किन संस्थाओं से आप डॉक्टरी की पढ़ाई कर सकते हैं तथा इस प्रवेश के लिए आपको क्या करना होगा ? कैसे आगे बढ़ना होगा ?

2. उचित विकल्प पर सही का (✓) निशान लगाइए –

• आपके आदर्श हैं –

(अ) कोई राजनेता।

(ब) कोई समाज सेवी या धर्म गुरू।

(स) आपके अध्यापक।

(द) कोई अन्य ————————————————

• आपने यही आदर्श क्यों माना है ?

.....

.....

नया जोश नई उमंग

सूरज ने एक दिन समन्दर के किनारे पे,
देखा कि लहरें किनारे से टकरा रही हैं,
और किनारा लहरों को फिर धकेल रहा है,
लहरें नये जोश, नई उमंग के साथ,
फिर किनारे से टकराती हैं,
सूरज ने सोचा किनारा ना हो तो,
इन लहरों का क्या होगा ?
वो लहरें मर जायेंगी,
उनका जोश मर जायेगा,
उनकी उमंग मर जायेगी,
क्योंकि किनारे ही उन्हें प्रेरित करते हैं,
नये जोश, नई उमंग के साथ,
किनारों से फिर टकराने के लिए।

– विपिन जैन

चित्र 24.3

"उन्नत होना और आगे बढ़ना, प्रत्येक जीवन का लक्ष्य है।" – अथर्ववेद
"कौन कहता है कामयाबी का पता नहीं है, उसे ढूँढ़ने की हद तक कोई ढूँढ़ता नहीं है।" – अज्ञात
"हम अपने जीवन में ठोकर इसलिए नहीं खाते कि मार्ग असमतल होता है, बल्कि इसलिए खाते हैं कि हम धीरज के साथ कदम नहीं उठाते।" – अज्ञात